डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

व्याख्या

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-३३

मित्र सुग्रीव-५

अनुवाद - मनीश श्रीवास्तव

वाल्मीकि के वर्णन के अनुसार सुग्रीव एक कठोर मुखिया हैं। ये जानना कठिन है कि विश्व भर की वानर जाति उनकी अनुयायी क्यों होगी। ये संभव है कि सुग्रीव का बाहुबल वानरों को आतताइयों से सुरक्षा की भावना प्रदान करता हो। उन्होंने सारे वानरों को एक परिवार की तरह संयोजित करके रखा था। उन्हें पता था कि अच्छे कार्य का पारितोषिक और उद्दंडता का दंड कैसे देना है। संभवतः ये उनके भाई बाली की कार्यप्रणाली थी! सुग्रीव ने उसी को आगे बढ़ाया। उन्हें इसके उपलक्ष्य में पूरे कुनबे से सम्मान मिला।

जानवरों में नेतृत्व एक प्राकृतिक जैविक गुण है। बहुधा नेतृत्व सामर्थ्य और कार्य पूरा कर सकने की क्षमता से प्राप्त होता है। एक आदर्श नेता ही कुनबे का रक्षक होता है। वो युद्ध में स्वयं को आगे कर दूसरों की रक्षा करता है। नायक को अपने बाहुबल का अनुमान होना चाहिए और यह भी पता होना चाहिए कि किस युद्ध में भाग लेना है, किसमें नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि जानवरों में विपरीत काल में अपनी शक्ति का अनुमान लगाने की क्षमता मनुष्यों से ज़्यादा होती है।

सुग्रीव ने राम से मित्रता बाली के वध के लिए की थी और सीता का पता लगाने का वचन भी दिया था। वानरों की इधर-उधर उछल कूद की प्रवृत्ति के कारण सुग्रीव को ये पूरा विश्वास था कि उन्हें सभी दिशाओं में खोजने के लिए भेजने से ये कार्य पूरा किया जा सकता है। उन्होंने इस कार्य को पूरा करने के लिए वानर सेना को एक माह का समय दिया। वानर सेना के इस कार्य को पूरा न कर सकने की स्थिति में उन्हें एक दूसरा मार्ग भी सोचना था। 'आपको अपनी यात्रा एक माह में पूरी करनी होगी, सफलता मिली तो पारितोषिक मिलेगा। किसी भी प्रकार विलम्ब मृत्युदण्ड का कारण होगा!' सुग्रीव ने गर्जना की।

यद्यपि ये आदेश बहुत रोमांचक था परन्तु उससे भी अधिक रोमांचक था वानरों का उस आदेश के प्रति सम्मान! पूर्व, पश्चिम एवं उत्तर दिशा से सेनाएं खाली हाथ वापस आयीं। 'विलम्ब मृत्यु का कारण हो सकती है' शायद ये विचार उन सबके मन में था। दक्षिण दिशा में गयी सेना के साथ हनुमान थे । हनुमान लक्ष्योन्मुख थे। वो प्रत्येक स्थान को भली-भांति परखना चाहते थे। सेना को उनका कार्य सराहनीय लगा, अंगद को भी कोई आपत्ति नहीं थी। जल की तलाश में वो एक अंधेरी गुफ़ा में भटक गए, उन्हें समय का भी पता न चला।

जब वे गुफ़ा से बाहर आये तो ऋतु परिवर्तन देख कर चकित हो गए। वे पतझड़ में अंदर गए थे और जब बाहर आये तो पत्तियों में वसंत के रंग निखर चुके थे। ये दृश्य देख सेनाधिपति अंगद बोले - 'वानरराज सुग्रीव हमें इस विलम्ब के लिए कभी क्षमा नहीं करेंगे। वो श्रीराम को प्रसन्न करने के प्रयास में हमें मृत्यु दण्ड दे देंगे, किष्किंधा वापस जाकर मरने से अच्छा है कि हम सब यहां भूख प्यास से अपनी जान दे दें।' वे आगे बोले 'हमें बिना सीता का पता लगाए वापस नहीं जाना चाहिए, हमें उनकी संभावित ठिकाने की कुछ तो जानकारी अवश्य होनी चाहिए!' सुग्रीव के आदेश का आतंक अंगद अपने पिता बाली को खोकर देख चुके थे।

अंततः वानरों को सीता का पता गरुण सम्पाती से चला। सम्पाती ने अपनी श्येन दृष्टि से सीता को लंका में देखा था जहां रावण का साम्राज्य था। हनुमान सागर लाँघ कर लंका पहुंचे। उनकी यात्रा बड़ी ही रोमांचक रही। वो सीता का पता लगाने और उनसे मिलने में सफल हुए। वानर महेंद्र पर्वत पर उनकी प्रतीक्षा में चिंता मग्न बैठे रहे। तभी हनुमान शुभ समाचार लेकर वापस आये। उन्होंने लंका दहन का सारा वृत्तांत सुनाया। वानर बहुत प्रसन्न हुए, उत्साहित हुए। उत्साहित अंगद बोले - 'आपने लंका का विध्वंस तो कर दिया परन्तु सीता को लेकर नहीं आये! हमें तुरंत जाकर उनकी रक्षा करनी चाहिए!' वृद्ध जामवंत को पता था कि सागर को पार करना इनके सामर्थ्य के बाहर था। उन्होंने समझाया - 'हमें वापस किष्किंधा जाकर ये शुभ समाचार देना चाहिए। आगे क्या करना है राम स्वयं निश्चित करें।'

वानरों को अधिक देर तक अनुशासित नहीं रखा जा सकता। वापस लौटते समय किष्किंधा के पास रास्ते में उन्हें मधुवन नामक फलों से आच्छादित एक वाटिका मिली। सारे वृक्ष मधुकोशों से लदे हुए थे। वह एक संरक्षित वाटिका थी जिसे समारोहों के लिए संवारा गया था। सभी वानर बहुत भूखे थे और दुर्बल हो चले थे। वो स्वादिष्ट मधु के लालच से स्वयं को रोक नहीं पाए और सुध-बुध खोने तक अपना पेट भरते रहे। संभवतः देरी के कारण मिलने वाले

दंड के विचार ने उन्हें व्याकुल कर रखा था। जब रक्षकों ने उन्हें रोका तो वो लड़ने लगे। जिसका परिणाम ये हुआ कि मुख्य रक्षक दधिमुख किष्किंधा की ओर इसकी सूचना देने के लिए निकल पड़े।

इस मधु काण्ड से सुग्रीव एक दयालु राजा के रूप में उभरे। वो राम और लक्ष्मण के साथ हनुमान की प्रतीक्षा कर रहे थे। दधिमुख क्षमा याचना के लिए सुग्रीव के पैरों में गिर पड़े। दधिमुख को ये भय था कि वो वाटिका की रक्षा करने में असफल रहे थे। उन्होंने सारा वृत्तांत सुनाया। सुग्रीव ने उनकी शिकायत पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। उन्हें हनुमान पर विश्वास था! उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा था दक्षिण दिशा से वापस आयी सेना अवश्य ही अपने कार्य में सफल होकर लौटी होगी।

शासकों को सहज बोध होता है। सुग्रीव को इस बात का भान हो चला था कि राम से उनकी मित्रता की प्रतिबद्धता अब सफल होने वाली है। जब एक मित्र अपने दिए हुए कठिन वचन का सफलता पूर्वक निर्वहन कर लेता है तब इससे बड़े संतोष की बात और कोई हो नहीं सकती! 'हे दधिमुख आप तुरंत वाटिका में वापस जाएँ और हनुमान को यहां भेजें। मुझे उनके और सेना के प्रयासों का वृत्तांत उन्हीं के मुख से सुनना है। कृपया शीघ्रता करें!'

सुग्रीव ने राम को आश्वासन दिया : 'कृपया धैर्य रखें मुझे पूरा विश्वास है कि सीता का पता लगा जा चुका है! यदि ये वानर आपने कार्य में सफल न होते हो मधुवन वाटिका का यूँ विध्वंस न होता! वाटिका में उनका मधुपान मुझे इस बात का संकेत देता है कि वे सफल हुए हैं।' राम अचंभित हो अपने मन बोले 'मधुवन का विध्वंस वानरों का एक शरारती कार्य ही है!' सुग्रीव ने वानरों को क्षमा कर दिया। उन्हें आगे के कार्य के लिए इन वानरों की आवश्यकता थी।

सुग्रीव को किष्किंधा पर वानरों के आगमन का शोर सुनाई पड़ा। उन्होंने ऊपर आकाश में उत्साहित अंगद को देखा, अंगद की पूँछ उत्तेजना से मुड़ गयी थी। सुग्रीव के अंतर्मन का बोध अब सही प्रतीत हो रहा था। हनुमान आगे आए और श्री राम के चरणों में नतमस्तक हो गए। हनुमान ने सहजता से सम्मानपूर्वक अपनी बात बहुत ही कम शब्दों में कही : 'माता सीता को कोई शारीरिक हानि नहीं पहुंची है। मैं उनसे मिला। वो अपनी निष्ठा में एकाग्र हैं!' वाल्मीकि हनुमान का एक आदर्श दूत के रूप में बहुत ही स्पष्टता से चित्रण करते हैं! वो सुग्रीव के मंत्री हैं!

हनुमान ने सागर पार अपनी यात्रा और लंका में सीता से हुई उनकी भेंट के बारे में विस्तार से वर्णन किया। क्रूर राक्षसों के बीच रह रही सीता की मनःस्थिति और उनकी हताशा का वर्णन किया। हनुमान ने सीता के राम के प्रति असीम प्रेम और समर्पण की भावना के बारे में सहानुभूति से बात की। उन्होंने बताया कि किस तरह सीता ने हनुमान के उन्हें अपने साथ ले जाने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया, उन्होंने कहा था कि यह उनके सतीत्व का निरादर होगा! 'मैंने उन्हें आश्वासन दिया है कि मैं आपको और लक्ष्मण को अपनी पीठ पर लादकर ले जाऊंगा। पूरी वानर सेना कुछ ही समय में यहाँ दिखाई देगी। मैंने उनसे कहा - हे माता, थोड़ा संयम रखें!'

वाल्मीकि द्वारा राम का चरित्र चित्रण जटिल है। अदम्य कौशल और वीरता का एक व्यक्ति अपनी पत्नी से इतना प्रेम करता है! सीता के बारे में सुनने पर राम अत्यंत भाव विभोर हो उठते हैं। वाल्मीकि के राम साधारण मनुष्य के रूप में सभी सूचनाओं को ग्रहण करते हैं और किसी भी त्रुटि के लिए सभी परिणामों का सामना करते हैं। वे एक सामान्य मनुष्य हैं! हनुमान को उनकी सफलता की प्रशंसा करने के बाद, राम ने कहा, 'वानर समुद्र को कैसे पार करेंगे? वे लंका कैसे पहुँचेंगे! हम क्या कर सकते हैं?'

सुग्रीव को राम की भावनाओं का आभास था। वे उस परिस्थिति से भली भाँती परिचित थे। वे अपनी पत्नी का विलाप करते हुए वर्षों एक अलग पर्वत की चोटी पर रह चुके थे। उन्हें पता था कि उनकी पत्नी कहाँ है, किन्तु उनके पास उसकी रक्षा करने कोई उपाय नहीं था। इसीलिए उन्होंने राम से मित्रता करके उनकी सहायता ली। वो बाली को अपनी राह से हटाने में सफल हुए थे हुए अपनी पत्नी पुनः पा सके। सुग्रीव आक्रमण के लिए दृढ़ निश्चित थे। उनके पास वानरों की सेना के रूम में संसाधन थे। उन्होंने सुना था कि सागर को लांघना एक सामान्य वानर के बस की बात नहीं थी, सिर्फ हनुमान ही ऐसे थे जो इसको पार कर सकते थे।

सुग्रीव के मन में राम के प्रति बहुत सम्मान था क्योंकि वे एक राजकुमार थे और एक शक्तिशाली धनुर्धर भी! सुग्रीव राम के कौशल और शक्ति का परीक्षण भी कर चुके थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि राम रावण को युद्ध भूमि में कड़ी टक्कर देने में और उसका सर्वनाश करने में सक्षम हैं। किन्तु वे समुद्र को पार करने के विषय में सोचे बिना आगे नहीं बढ़ सकते थे। उन्होंने हो रही घटनाओं को स्वीकार किया और सच्चे मन से मित्र भाव के साथ राम को सांत्वना देने की कोशिश की।

'आप एक सामान्य मनुष्य के रूप में क्यों प्रतिक्रिया दे रहे हैं? आपको नकारात्मक विचारों को अस्वीकार करना चाहिए जैसे एक कृतघ्न व्यक्ति मानवीय सद्भावना को अस्वीकार करता है।' आपको पता है कि सीता कहाँ हैं और हम ये जानते हैं कि वहाँ पहुंचना कैसे है। आप कुशल, चतुर और ज्ञानी हैं। आपको इन सामान्य व्यक्तियों के नकारात्मक विचारों का परित्याग करना चाहिए सो आपके व्यक्तित्व को शोभा नहीं देते। एक प्रतिष्ठित व्यक्ति भी तनाव से निर्बलता की अनुभूति होने पर हार जाता है! हमारे वानर सक्षम, कुशल और निष्ठावान हैं। वे आपकी सेवा में अग्नि में भी प्रवेश कर सकते हैं! हम सागर पार करेंगे, दीवारों को लांघ कर रावण का सर्वनाश करेंगे। मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि कृपया सागर पर एक सेतु बनाने में हमारी सहायता करें कि जिससे हम उस पार जा सकें। सेतु के बिना हम सब फंसे हुए हैं!'

सुग्रीव राम की क्षमता को जानते थे। वह उन्हें उनकी उदासी से बाहर निकलना चाहते थे। वे आगे बोले 'भय मनुष्य को हराता है, उदासी मनुष्य में वीरत्व को कम करती है! वीरता की ही विजय होती है! आप एक नायक हैं और आप अभी आवश्यक गुणों से सुसज्जित हैं। आपको पूरे ब्रह्माण्ड में कोई नहीं हरा सकता! जब आपके हाथों धनुष हो तो आपका सामना कोई नहीं कर सकता! हमारी वानर सेना आपकी संपत्ति है।'

महाराज सुग्रीव ने राम को मित्रता युक्त आदेश दिया : 'अपने दुःखों से छुटकारा पाएं! यह क्रोध और रोष का समय है!'

एक राजा ये भलिभाँति जानता है कि युद्ध में कैसे जाना है!■